

३८ ASHA ARCHIVES

गोहरी म. २८

०
रंक्षे प. पद्या १

3406

[illegible][illegible]

नमो ग्रीष्मय नमः ॥ थडानि स्यात् ॥ थनं खन दडासकं वसुकसकवस
कं थडाकं लाय ॥ ॥ थनम्रासनयूजा ॥ वननवाकवायाडा, क. खाननयाडा
थडा नाहातनथियाडा यनय ॥ मनु ॥ यृथिवा मवृष्टमभिः सूतवंचुनः क
मादवता म्रासनविनिआगः ॥ ॐ यृथिलयाधृतालाका दतिचं विष्नुनाधृता ॥
तं वधावयमादवि यविचं कनमासनं ॥ म्रसनसकतन ॥ मनु ॥ ॐ रुरुवः स्व
कमासनायननशा ॥ जें म्राधनमकि कमलासनायनमः ॥ म्रम्रासनयूजा ॥
॥ थनने म्रम्रासनयूजा ॥ दवचाखडास वननवाकवायाडा, क. खानकाः

॥ ॐ जें म्राधनमकि कमलासनायनमः ॥ ॥ थनगुनमधुनद
यकाडा, क. खाननं खडायाडा यूजा ॥ ॐ गुनं नत्यामदि ॥ नीलसाहिनेमना
थमयातिवकनम्राय द्वादममकि यकायस्मिन् द्वाद ॥ म्रम्राजो वलि गृध्र
खाहा ॥ कतन ॥ गुनजाय ॥ जें दिग्मा रुधपादकां पूजायामिनमः ॥ ॥
थनकखानन ॥ दानयूजा ॥ जें कौथी दौ दानमियायेनमः ॥ कौथीगंम (स
मयनमः ॥ ससवसथेनमः ॥ दूदुर्गार्थेनमः ॥ दौं कृपासायेनमः ॥ मंमंम
निथेनमः ॥ ययमनिधयेनमः ॥ कौमाया मकोनमः ॥ विविचुर्केनमः ॥ ॥

ॐ नमः ॥ विविधा ॐ नमः ॥ दंदरु ॐ नमः ॥ द्वा द्वा नद वता ये नमः ॥ ॥
 स्वान के का या उ। ना वा च म डा न द द्वा द्वा दि ग स दा न ॥ मनु ॥ ॐ श्री य मु द्वा र
 र ॥ मृ य स नु य र ता य र ता उ वि स रि ता ॥ य र ता वि य क र ता व स न य
 मु मि वा रु या ॥ ॐ ॥ मृ य स न ना य स द र्भ ना स्र य द्वा र द्वा र द्वा र ॥ मृ य
 य र द्वा ॥ थ न न थ डा ना सा ता न थ या उ। व स द्वा ता न ज या उ। दि वा दि
 मि न थं सा या उ। वि य पि दा न ना न य ॥ ॥ थ न र ता स द्वा ॥ नं कौ लीः मृः
 मा य र द्वा ॥ थ डा ना सा ता न थ या उ। द्वा ति का न दि न्वा न ना दा उ। थ डा न

[illegible]

लि चाननन सुयु सामध मा (नन चाननन मध जीव र्व नन्य वक्र लभ ना
या ॥ धन लाउना लिच मनन नानप थडा खव वाका स याप पून ख लाक
स्थान झादु मिखा झादु ग्वाचु खर्ग सुयिद डाद बाद लाव पाडा ॥ यं
धुविजन खडा क्रासन साइकायाडा थ सायाव मन पाप पून ख गद ला
नप ॥ वं ट क्रासन पान तिदाडा नयाडा लावप साइकाय थ सायाव मन
पाप पून ख मिनद रुनप लावप ॥ यं ट मनन उ चाननया डाडा रुडा क्रा
नवा युता दर्त थन रु सप सय द लावप ॥ वं ट मनन उ र्व ननया डाडा

रुडा क्रासन साइकायाडा मान स वाद मृ मृ तन ख वा गभ कन थडा स
निन रु लम य लावप ॥ लं १४ धुविज मनन उ र्व ननया डाडा वायु वं ध
नप अनिसपि लुकठिन लावप ॥ हं ट मनन लावपाडा खडा क्रासन वायु
नवत ॥ मनीन न या भूकान समरु रुद्र पादादि मनीन पून लावप ॥ सा
हं स ४ धर्क जिवा सा यन निव स वाद जीव रु दय स मिनन काकायाडा न
ला उ स रुय थ थ पा ल या म या डाडा भू लनिर्मल निपा प लावपाडा
थडा रु दय स रु द वी लावप ॥ ॥ धन लान मू दान नू लन थि याडा थ

मनु॥ कुं॥ ॥ थमनुन मसा वननिश नंगनगा थमनु यातउ न व्यापनय
धकं दु॥ सिय॥ ॥ रुनां नंगनय सुयमनुन दायगकला आदुवर्धस
यथाथिदतं जधकं सिय॥ मनु॥ कुं॥ ॥ नंगनननिश थमनु यातजं युमव
ता उमव कय क्रातिखा समिरु दु॥ सिय॥ ॥ उमवनिश वधनंधगाः
साममनुनतां वनुमाथितं रुज याडावाठ दायसकनासिय॥ मनु॥ कुं॥
॥ वधनंधसिय॥ ॥ वधनंधनथ कयान चितननियथस वधनंधव
य थथानस सा कयानं रुज याडावाठ धकरावनासिय॥ मनु॥ कुं॥ कुं॥

कुं॥ ॥ वधनंधवसिय॥ थननि॥ मनु॥ नें कुं॥ सौः आयाडा नारातयविठ
जानवा कतनयाडाडा मारुका न्यासयाय॥ ॥ थन मारुका न्यास॥
नस्य श्री मारुका न्यासस वधनंधा मधीः गयणी दूतः मारुकासनसौतिद
नता रुतावी जानिसुना ४ मकयय को कोलकं ०० सार्थन्यास विनियान ४
॥ मूकं खं गंधं रुं नूं रुदयायनम ४॥ नंगनस ॥ ०० चं दूं उं मं रुं ०० निनस
स्वाहा॥ मानस॥ उं टं ० उं टं ० उं टं मिखाये वषट्॥ मिनयास॥ नूं तं थं दं धं नं
नूं कववायदूं॥ कवच॥ उं पं रुं वं रुं मं उं नं रुं यायवीषट्॥ मिखास॥ मूं यं

अथ काश ॥ हं नमः ॥ खडा काश ॥ वं नमः ॥ नाहिस ॥ हं नमः ॥ या थ स ॥ मं नमः ॥
नू ग व हा त स ॥ यं नमः ॥ क थ स ॥ नं नमः ॥ जडा रु व स न स ॥ लं नमः ॥ मि न खा स ॥
वं नमः ॥ खडा रु व स न स ॥ नं नमः ॥ नू ग व न न स न न जडा ना हा त लं ॥ यं नमः ॥
नू ग व न न नि स खडा ना तां ॥ सें नमः ॥ नू ग व न न नि स जडा या नि तां ॥ हं नमः ॥
नू ग व न न नि स खडा या नि तां ॥ लं नमः ॥ नू ग व न न नि स ना हा ता ॥ हं नमः ॥ नू ग
व न न स थ तां ॥ थ न न ना ह का ना स ॥ ॥ दक्षि ण मू लि स व य न मः ॥ मि न
स ॥ य कि छ द स न मः ॥ खा न स ॥ श्री णि य न स द नि द व ता ये न मः ॥ ह द य स ॥ रु नां

कुं वी उ हू ति मू वा क्ष न ॥ गु ष्ठा स ॥ कुं न कि हू ति हू द य ॥ नू ग व स ॥ कुं कि
कुं ल कं हू ति जा न्ना म म य न म श्व नी ॥ कुं पि णि र्थ ना स यू जा दी वि नि था नः ॥ कुं ॥
थ न स ठा स न ना स ॥ लें कुं श्री श्रूं नां सोः णि य न मू मू ता र्वा स ना य न मः ॥ या नि न या
सं धि य ॥ लें कुं सोः णि य न मू वि णा ना मू जा म ना य न मः ॥ यू नि नि या सं धि य ॥ कुं कुं
सोः णि य न स द नि द वा ना स ना य न मः ॥ ख न पा न स रं ॥ कुं कुं सोः णि य न वा सि
नी व का स ना य न मः ॥ क व चू क नि स नि खं ॥ कुं कुं कुं णि य ना श्री सर्व म लु स
ना य न मः ॥ म न द्वा न स ॥ कुं कुं कुं णि य न मा सि नि सा थ सि द्वा स ना य न मः ॥

गुह्यम् ॥ ॐ श्रीं ॥ त्रिभुवनसिद्धसिद्धाङ्गनायनमः ॥ नमः ॥ ॐ श्रीं
॥ ॐ श्रीं ॥ त्रिभुवावायर्षी कर्मकिपिथो सनायनमः ॥ नमः ॥ ॐ श्रीं ॥ ॐ श्रीं ॥
श्रीत्रिभुवनहं नवीनदागितयुता सनायनमः ॥ चमयासस ॥ ॐ श्रीं ॥ ॐ श्रीं ॥
सतासनन्यास ॥ ॥ धन श्रीचक्रन्यासः ॥ ॐ श्रीं ॥ विद् चक्रायनमः ॥ चमया
नमः ॥ ३ त्रिकोणचक्रायनमः ॥ कथानमः ॥ ३ भूषणचक्रायनमः ॥ क्वातिनास
॥ ३ भूकर्मभवनचक्रायनमः ॥ नमः ॥ ३ वहिर्द्वभवनचक्रायनमः ॥ नमः
नमः ॥ ३ चतुर्दशभवनचक्रायनमः ॥ नमः ॥ ३ भूषणचक्रायनमः ॥ गुह्यम्

॥ ३ धावनचक्रायनमः ॥ नमः ॥ ३ चतुर्दशभवनचक्रायनमः ॥ वा
लिनयास ॥ ॐ श्रीचक्रन्यासः ॥ ॥ अथनित्यान्यासः ॥ ॐ श्रीं ॥ श्रीं ॥ काम
नीनित्या श्रीपादकां पूजयामिनमः ॥ कथानमः ॥ ३ श्रीं रुग्मासिनीनित्या श्रीपा
दका ॥ ॐ श्रीं ॥ ॐ नित्य किन्नानित्या श्रीपादकां ॥ ऊँ मिखा ॥ ३ ॐ रुग्मा
नित्या श्रीपादकां ॥ खडा मिखा ॥ ३ ॐ वक्रियासिनिनित्या श्रीपादकां ॥ ऊँ
क्रमयातस ॥ ३ ॐ मलवक्रुग्नीनित्या श्रीपादकां ॥ खडाक्रमयातस ॥ ३ ॐ मि
वद्वीनित्या श्रीपादकां ॥ ऊँ क्रमयास ॥ ३ ॐ तानित्या श्रीपादकां ॥ ख

ॐ नमः ॥ ३ कौं कौं कौं विद्यातलवापिकार्यं त्रियूनसूचयेनमः ॥ नृगनसः ॥
३ सोः ॐ मि ॐ वतलवापिकार्यं त्रियूनसूचयेनमः ॥ कयावसः ॥ नें कौं श्री
नें कौं ॐ सोः ॐ कौं सर्वतलवापिकार्यं त्रियूनसूचयेनमः ॥ वसयान
दथसः ॥ ॐ तितलवापिकार्यं त्रियूनसूचयेनमः ॥ ॥ अथ अविच्छन्दन्यासः ॥ नृगनसूचयेनमः ॥
अविच्छन्दन्यासः ॥ त्रियूनसूचयेनमः ॥ मम ॥ श्रीमहात्रियूनसूचयेनमः ॥
दवता हृदयाय नमः ॥ मम ॥ नृगनसः ॥ कौं विजं ॥ ॐ श्री ॥ कौं नकि ॥ पवि
निसयासिनी ॥ ॐ कौं सकं ललाटममसः ॥ ॐ श्री ललाटममसः ॥ ॐ कवितावक्त्र

सर्वगसः
वदनविनियोगः ॥ ॐ त्रियूनसूचयेनमः ॥ ॥ अथ मूलवर्तनन्यासः ॥ नें
कौं श्री नें कौं श्रीमहात्रियूनसूचयेनमः ॥ नृगनसः ॥ ३ कौं कौं
नृगनसः ॥ ॐ श्री नमः ॥ ३ सोः ॐ श्रीमहात्रियूनसूचयेनमः ॥ दथन्यासः ॥
३ सोः ॐ श्रीमहात्रियूनसूचयेनमः ॥ नृगनसः ॥ ३ कौं कौं कनिष्ठिकायोन
मः ॥ ॐ श्री नमः ॥ ३ नें कौं कनकलकनयुष्टायां नमः ॥ ॐ कनकाधन ॥ नें कौं
श्रीमहात्रियूनसूचयेनमः ॥ नृगनसः ॥ ३ कौं श्रीमहात्रियूनसूचयेनमः ॥
सूचयेनमः ॥ नृगनसः ॥ ३ सोः ॐ श्रीमहात्रियूनसूचयेनमः ॥ नृगनसः ॥

वाङ्मिहिश्रुथ श्रीमहाविष्णुसूक्तनीयैर्यथैव भक्तिपूजामहं
कलिष्ठा ॥ धनसंकल्प ॥ ॥ क. स्नानकायाडा ॥ जें की श्रीं समस्तपुत्र
दुष्टकनसं पुदायकसकोलनिगहनरुसा नरुसातिनरुसा याजिनी
मा १ श्रीपादक स्नानम १ ॥ धनपत्रपाडा श्रीचक्रसय्याजसिंयाय ॥ ॥
धननवमूडाकने ॥ जें की की वूं सः कों धूं धूं १ जें की ॥ धनमूडाकने ॥
॥ ॥ धनसंखस्त्रायन ॥ संखयमा ॥ जें १ क. सासनायनमः ॥ जें वदि
मन्त्राय. संख सामानार्थपाशयनमः ॥ नूसायरुट ॥ निन ॥ की
॥ कतने ॥

हंस १ सूर्यमधुसाय सामानार्थपाशयनम १ ॥ स्त्रायन ॥ सौः साममहुलाय
सामानार्थपाशयनम ॥ संखधन ॥ गंगचक्रमूनचैव ॥ स्यादिनयनपाडा ॥
संखधन ॥ की की सौ १ सः सः सः स्नाननरु नवायनमः ॥ धोवननदर्थ सौः
नम १ ॥ धनमूलमकुन ॥ श्री सामानार्थपाशयनम १ ॥ कतने ॥ आवा रुनादि
चन्दनाकृतयूथनमः ॥ धनमूडाकने ॥ गशिठिन दवसकं वमुकसं थडा
कंदाय ॥ ॥ नूथमूलयाग स्त्रायन ॥ जें सर्वमकुसनायनमः ॥ जें की सौः
कामनूयादि उद्यानपि १ यनमः ॥ जें की श्रीं जें ना नी वूं नूं धर्मयुददमकला

स्मनः त्रिमं तु लाय श्री विष्णु सन्दीपनी श्री यथा शासनाय नमः कतन ॥ जें पा
 रं ॥ अध्यामिरुट ॥ स्मन ॥ जें कौ सौः धूप रुय ॥ जें कौ श्री मरुति धूप सन्दीपनी पा
 रं पुति छा ययामि ॥ पाठ थयुप ॥ संख सखा कन खन नरु वन्दन चरु समन
 पाठ या द थ सवाय, त्रिका ल, खट कल, वाक चरु न प्रम धुन वाय त्रिकन
 सजाय ॥ न न न वाय ॥ जें कौ सौः सौः कौ नेंः खतु का ल सवाय ॥ ४० दध स
 वाय ॥ कौ मधुन सवाय ॥ अथ य गुन पाठ, दव पाठ, ल ग पाठ, अथ न ॥ द
 व पाठ सवा कडु वा न गुनिस तय कं रुय ॥ कं ला सनाय नमः ॥ श्री स्मन

श्री
 स्मन

सद्धि शाक ३

नवाय वषट् श्री नवाय वषट् ॥ अ कं रुन पाठ थन ॥ व द्वां द खतु
 न रुतं मधु खपन ॥ श्री मान्मकं आयु तितं महा पाठं विष्णु र्वाधमिनय ॥
 अमृत न पाठ थन ॥ श्री अमृत मूदान वाच ॥ ॐ पुं पुं पुं पुं साहा ॐ अमृत
 अमृत ॥ रुव अमृत वरि लिय नाद विमृतं अवय २ सां ई अमृत अर्थ नम स्वा
 हा ॥ सद्धि गो नते ॥ कं अ व र्ध थन याय ॥ वं धे नू मू दा ॥ जें या निमू दान ॥ मत्स्य म
 दान ता कय ॥ कौ वृषू आय मू चै र मू रं अवय २ साहा ॥ वूं व द्वा आय मू चै र
 अमृतं अवय २ साहा ॥ मूं भु क आय मू चै र अमृतं अवय २ साहा ॥ वूं नू द

अथ मंत्र २ मन्त्रं आवय २ स्वारु ॥ श्रीं श्रीं स्वारु ॥ धन दद्यादि नयमा ॥
पाठयामा यतिन ॥ वनूत्त दवा वि श्रीं श्रीं दारु वानूत्ती दवा धिमहि त
नानुत्त य आदयात् ॥ धन मूल मनुन श्रीं श्रीं रुयां रुनि ३ ॥ मूवा रुना दि धि
नुन डाकन ॥ यानि मूडाकन ॥ धन कू मू स्थापन ॥ यमा ॥ जौ श्रीं कूं हाय ना य
ननः ॥ श्रीं श्रीं नानुत्त रु नवाय नमः ॥ श्रीं श्रीं सखा दवो वषट् ॥ गकिन कूं रु धन
क ॥ पाठ श्रीं स य हा डा का सम च तय श्रीं श्रीं तिर्थ धन स्था ॥ व श्रीं शुख शुख सं ह

तं चित्वादिन ॥ ॥ धन स्वत च नू स्थापन ॥ धन श्रीं स्म यमा ॥ गुनू पाठ न
गुनू तर्पन यमा सिनम ॥ जें जौ श्री गुनू त्या श्री या इ कां य रु यामि तर्प यामिन
नमः ॥ ३ यन मे ही गुनू श्री या इ कां य रु यामि तर्प यामिन नमः ॥ ३ यन मा वा य
गुनू श्री या इ कां य रु यामि तर्प यामिन नमः ॥ ३ यन यन गुनू श्री या इ कां य रु यामि
तर्प यामिन नमः ॥ ३ यन मि वा दि गुनू श्री या इ कां य रु यामि तर्प यामिन नमः ॥
स्वाना क का या डा हा डा व पा डा श्री गुनू या क मु ति या य ॥ श्री ना था दि गु त
गु यं न व य नि यी ० गु रुं न व सि दि स्था व द क गु यं य द य गुं दू ति क म भं रु

वं॥ वीप्रवाहचतुष्टयं, सखिनवकं, वीनावलीयंवकं, श्रीमत्सालिनिमलुर्नर
 यनाख्याः यनाख्या, यनायनाख्या, यनायो नमः॥ **कस्ताननसिनसुतन॥ धन**
आवाहन, धूनडा डाडा, धौ ० धा डाडा, मालिनिधनय॥ नमः श्रीगुरुकार्य
 श्रीरुद्रवउवाच॥ जय त्वं मालिनी देवी निर्मलमलनासिनी, ह्यानमकिः य
 रुद्रवी, वृद्धिस्तं भजवद्धिनी॥ जननी सर्वरुतानां संसाधनसिन्धुववहि
 ता॥ माता वीनावती देवी, कावूर्ध्वं कून्वत्सलं, ऊर्यति यनतत्वे निर्वाह
 से हतिर्न आमया, निःसृता वा कनूया सनूया, यना ह्यानमकिः स्वामि श्रु कि

साक्षात्, नन्देष्टु गोमलुसें ॥

सामं हला, मद्धि प्रखा, स्रवखा यूनः सफता एत्यु वत्सु, धुला कालवृया स्रवपा
 युरुद्धिदिनगतिमुसगायसे, राख अतिवृया स्रवयानिवा ऊष्ट नामाच वामाच मोड
 ताना कामिका विन्दूवृया स्रवृया, वधूताई चन्द्रा, हतिस्तं छिद्रुषा मूडमकान, ००
 काल, एका न, उका न, मकान, संआतिर्न, ऊत्तमापदत, तत्तवृया स्रवृया, रुगमकान
 वस्त्रायनी, आदितत्तु रुवाका कआतिवृया च श्रीकृष्णसंवाधनी, नूडमाता तथा न
 न्दमकिः सस्रुद्धिमुर्ति, रुथा वामन, गर्धिनी रानरुतिस्ति, श्री सौमिक, स्वा
 नरुता, रुनाखा, च, मिष्ठि मसा ग्रात्मिका, नृगृह, मर्द्धिता, कून्वदहामहास

न सहागिनी साठ मन्त्रा मृताविन्दु सदाह निःस्यं रुदरुयुता ॥ अथ सप्तक
यना नन्दनिर्वर्ण शोखायुध रं नवीरं नवशान् की जान म क पनामालि
नी नूडमालाचित नूडभक्ति ४ खलसिद्धिआ गन्धनी सिद्धिमाता विरुति
सद्वना नीतिआनिष्ठां र्वी वाग्निपुद्गानिवा सिद्धिआ गन्धनी मारुकाच
त्वनिष्ठा क्रिया मंगला सिद्धि लब्धा विरुति संरुति गति ४ साधना सायना
सा निनायायनी नकचछा का लासदक्ष हिमनूया मरुचूषा यागपीया
॥ त्वं ऊयनि ऊयाचारिता ॥ नूडसंभारुनी त्वं नर्वत्मा नयवदवसा त्वं यथा

नामिह मनुमार्जन नेमालि वात्रपाना नूडके ४ सूरुके ययंयुद्ध ॥ दवीपं
वाहने दिवापाना त्वं मूधुके कालकापालिनी ॥ एककर्म द्विकर्म त्रिकर्म चतु
४ यं चषय फर्कनारुर्व मूर्के ४ खनार्व ४ मूर्के ४ रुग्णयं मूर्क मयमा र्पिपिः ॥
मनुविद्या वना हासिहि मूधुके कालकापालिनि दिवाच आनू नर्क नमस्का
वर्तु कानसाहा साधका काल वीषट् वषट् काल कुं काल रुट् काल गानी
हि नर्क यम नूडनी वात्रिहि वा मरुकाहिनी वादसजा वालि गोयिहि
४ साधर्क ४ पूडर्क मालिहि हिर्मधुल दिदिमं यागिनी वृन्दम सायर्क नू

पुत्री जल से ४ य अश यागिनी याग सिद्धि युद्ध दविषय यथा यमे लाचने ४
मन्त्र ह यूर्ध्वमुखं य अश तस्य दिव्या कवि कृष्णिता सफ पातास संखचनी सिद्धि
नया हता वरुण रुक्मिणीयं ४ य ८० द्वादश कालं च कर्क संदि कानं उ कालं स्म
नश ४ सदा मानव ४ सायि चो नानि म कालं व य च ता अपि स न द स द वी पूजा
नूना म म हा स स्त्री प्रिय रुम चो नान्य दानान् म का य व द्वा य (ग) ग्राम हा
वा य इ स्त्रा विमू च्य कि स स्मृ त्प द वी तं दी य मुखं निर्मलं यूर्ध्व च न्द्रा न् कानं
सू न द्वि य मानि व स त्कं तुला घृ ह ग तु क ला द वि व द्वा नू च च न्द्र न न्ना ग

पार्श्व शुभा व द्वा पा दा नु तं कपि त्वं नान सं कीर्ति ना द विमू च्छ नि धार्म म
हा द्वा प्रि स सं स्मृ त्प दा न वि न्द द य न म हा का ल का ला नि तं ४ य हा
कं च (ग) वि न्द व द्वा नु च न्द्रा कं य द्वा यूर्ध्व मो लि मा ल लं स त्प द कि न
क म लि ऊ लं स द्वा स सर्व वी नां वि क रं न वी रं न व र्ण स व र्ण ग ना र्द न
म स्वा प ना रं क म स्वा प ना रं नि व ॥ सर्वं तु स्त्रा म हा द वी रं न व न म हा त्म
ना त ता लिं ग वि नि र्दं क म तां य न म य वी ॥ ०० ति श्री मा लि नि स्कारं स
मा य ॥ थ न या द्वा दि च न्द्र ना द न यूर्ध्व द वि स्त न न ॥ ॥ थ न य अ व

सिंहगृह २ सारु ॥ **धन आ वा रु ना दि ॥** दं द मू डां ड म य ॥ **आप ॥** श्रीं कौ सारु ॥ १०
धन युति ॥ १ ॥ **धन कृ प्या न या ॥** ^{को ६० यो १२} **छठं ग न त्या स ॥** **आ स न य जा ॥** जे ज न रा स
ना य पा ड कां ॥ **धन ॥** स्व स्म न कृ प्या ल क स र्व कृ त सि त म् ॥ त व ता नू व नि रुं द
तं व तु र्कुं उ धृ ता य धं ॥ ख म रु ट क रु स क ॥ उ म नू ख द्वां ग भ व य क या लं गू ल
रु सं च धा ल य स्त्रा य वी ति नं ॥ ना ग रु न व सृ षा मि वा द्वां सु क टि रू ष तं ॥ म लु
मा ला ग ल य कं हा ज रु न व सृ षि तं ॥ दं श क ना ल व द नं यि मी यु पि मी ला
च नं ॥ ति न रुं न क नू ड ॥ उ य नू य रु य की नं ॥ न ना स नं कृ प्या लं स र्व का

म रु ल यु दं ॥ **छायां उ लि ॥** जे ज दौं दौं दूं दूं दौं दू ४ दूं दू प्या ला य ३ ॥
आ पा न ॥ धन यो लि ॥ जे ज ०० दे व स्म ना वि ष त य य था ना म् नू व त न
२ म लु ल म धी नू व त न २ व तु र्कुं उ ति न रु का श ख द्वां ग ख म रु ट क गू ल प्या ल
य म रु क या ल मा ला रु न म् म य वि दू का टि स म यु रं ॥ उ क टि रु ग व कू न व नू य
व य थ प य न्ना नां व सि गृ ह २ म म वि द्वा द य र्कां दौं दूं दू २ सारु ॥ **धन य नि**
वा न य जा ॥ जे ज नू सि ता म् रुं न वा य पा ड कां य रु य मि न मः ॥ जे ज नू रुं न वा
य पा ड कां ॥ जे ज च तु रुं न वा य पा ड कां ० ॥ जे ज का व रुं न वा य पा ड कां ० ॥

ॐ श्रीं श्रीं सर्वसं कृतिनादि च उदम म किं द विष्णो श्री पादुकां यूर्त ॥
नाम ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं : त्रिपुत्रा च कुंभ नीतिना श्री पादुकां यूर्त ॥
॥ एता सर्वदा य आगि नो सर्वसो रा ग्य दा य के च कुंभ मूलाः स सिद्धयः सा
युजाः सदा रुताः सा न्या गः स पतिवानाः सर्वपुत्रा नैः संयुक्तिताः स नु
सर्तपिताः स नु २ ॥ त्रुं सर्ववर्गैक निमूला य नमः ॥ धनं मूला के
॥ ॐ ति च ल ॥ व न नं ॥ ४ ॥ धन य कु मा व न नं ॥ ॐ श्रीं
साः वादि ॥ म न मः ॥ ॐ श्रीं श्रीं कं सर्वसिद्धि पुदादि द

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीपादुकां यूर्त ॥ **नायिका** ॥ नैऋतीं श्रीं श्रीं श्रीं ४ त्रिपुत्रमा
त्रिनीचकुम्भनीनिखा श्रीपादुकां यूर्त ॥ उताः कृसाकृसा नीन्यः सर्वार्थ
सिद्धिर्क. चक्रसमूहाः ससिद्धयः सायुधा सवारुताः साज्ञाः सपत्रिवा
सर्वापचारैः संयुजिताः सनु २ सतर्पिताः सनु २ ॥ सः सर्वमादिनि मू
दायेनमः ॥ **धनं मूडा कन ॥ सः ॥ इति यं कृता वननं ॥ ७ ॥ धनं स**
हमा वननं ॥ नैऋतीं श्रीं नृकदम्भनवकाशनमः ॥ नैऋतीं श्रीं सर्वसाधनादिद
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीपादुकां यूर्त ॥ **नायिका** ॥ नैऋतीं श्रीं श्रीं श्रीं ४ त्रिपुत्रमा त्रिनीच

कुम्भनीनिखा श्रीपादुकां यूर्त ॥ उताः निगर्हयानिन्य सर्ववद्राकनचक्र
समूहाः ससिद्धयः सायुधाः सवारुताः साज्ञाः सपत्रिवा सर्वापचारैः संयु
जिताः सनु २ सतर्पिताः सनु २ ॥ **को सर्वमहादूष्ममूदायेनमः ॥ धनं मूडा**
कन ॥ को ॥ इति षष्ठमा वननं ॥ ७ ॥ धनं सफमा वननं ॥ ३ नृशवच
काशनमः ॥ ३ त्रिनीयादिवाद्यवता हकं श्रीपादुकां यूर्त ॥ **नायिका** ॥ नैऋतीं
श्रीं नैऋतीं श्रीं त्रिपुत्रसिद्धा चक्रकुम्भनीनिखा श्रीपादुकां यूर्त ॥ उता नरुस्यथा
निन्य सर्वनागैः चक्रसमूहाः ससिद्धयः सायुधा सवारुताः साज्ञाः सपत्रिवा

नमामृत भक्तिः सर्वचक्र ग्वनी, सर्वमनु ग्वनी, सर्वयं ग्वनी, सर्वतनु ग्वनी,
 सर्वयी (०) ग्वनी, सर्ववि (०) ग्वनी, सर्वविश्व ग्वनी, सर्वविन ग्वनी, सर्वसि
 (०) ग्वनी, सर्वआ (०) ग्वनी, सर्ववाणी ग्वनी, सर्वनाउ ग्वनी, सर्वरा (०) ग्वनी,
 सर्वकाम ग्वनी, सर्वतत्त्व ग्वनी, सर्वसर्व ग्वनी, सकलजड्यतिमाह कात्रकास
 नयवता, सहिताः सहिताः समुदाः सहिर्दुयः सायूक्षः सामाः सवारुनाः स
 नकयः सयनिवावाः सार्नकानाः महानन्द ग्वनी श्रीमहाप्रिय नन्दनी, सयन
 या, पनया, यनया, यनायनया, सययया, सर्वायवा नेर्महानन्देऽसंयुक्तिताः सनु

सन्निधिनाः सनु २ संकुशा सनु २ ॥ जेवीजमूडार्थनमः ॥ धनं मूडा केन ॥ १ ॥
 धनं नवाननयूजा ॥ २ ॥ धनं श्रीविद्यानरुणाञ्जलि ॥ श्री १३ श्रीमहाप्रिय
 नन्दनी महारुद्रानिका श्रीचक्रचक्र ग्वनी श्रीपादकांयूजयामि नययामि
 नमः ॥ जेआनिमूडायेनमः ॥ धनं मूडा केन ॥ इतिमूलसुनयूजा ॥ ॥
 धनं यवीसक सठ ननयूजा ॥ जेकां श्री, जेकां श्रीः श्रीकां श्रीकां सर्वरुमके
 सर्वरुमके भूजेकां रुदयभूजे श्रीपादकांयूजयामि नययामि ॥ ३ जेकां
 श्रीः श्रीकां श्रीकां निरुय एकितामके निरुय एकितामके कांकां गिले ४ मके श्रीया

[illegible]

मौं ह्रीं उँ यां नौ सां वीं मां कामध्वनी ॥ छा कामरूपयुद सर्वसत्त्ववर्भकनि
जगत्कारकायक हुं हुं हुं डां डीं कौं वूं सः श्रीः कौं नैं कामध्वनी समयादवी श्री
पादू कां ॥ ॥ नैं कौं सोः नैं कौं श्रीं कौं सर्वकार्याथ साधकि कौं वड्ठ ध्वनि वड्ठ यंजन
मल्लगत कौं कौं ननैं कौं निखमदउव कौं वड्ठ ध्वनी समयादवी श्री पादू कां ॥
॥ नैं कौं सोः नैं रग गुण रुग्निनि रुग्नादत्रि रुग्मासे रुग्भवद् रुग्नुक्ते
रुग्गानि रुग्वति रुग्निपातिति सर्वरुगवर्भकत्रि रुग्नुपनित्यक्रि
ने रुग्स्वरूप सर्वरुग्निभक्षानयवनदन न सुवत रुग्किन्नकिन्नउ

यनाविद्याधीपाइकां ॥ श्रीं ४ यनायासाद उर्जानाय श्रीपाइकां ॥ **शुद्ध स ॥**
श्रीं द्वैरुद शुभानाय श्रीउग्रानादयो श्रीपाइकां ॥

॥ **युवननिश ॥** जें श्रीं श्रीं श्रीं क मरुतकी श्री वीरुन्दमन्दितासनसिगा
ये मरुगियन सोन्दर्यादि श्री पंच स श्रीं श्रीं पाइकां ॥ जें क मरुकाय
श्री वीरुन्दमन्दितार्थ श्री मरुगियन सोन्दर्यादि श्री पंच श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं

इकां ॥ जें क मरुकल्य सत श्री वीरुन्दममन्दितासनसिगार्थ श्री म
रुगियन सोन्दर्यादियं च कल्य सता श्रीं श्रीं पाइकां ॥ जें मरुका
मदध श्री वीरुन्दममन्दितासनसिगाये श्री मरुगियन सोन्दर्यादियं च
मदधल्य श्री पाइकां ॥ जें क मरुनल श्री वीरुन्दममन्दितार्थ श्री
मरुगियन सोन्दर्यादियं च नल्य श्रीं श्रीं पाइकां ॥ **श्रुति यं च यं चिकायुगा ॥**

॥ **यन खत दर्शन युगा ॥** रूद्र रूद्र श्री द्वदन सन ॥ युगा ॥ जें नान उ नान उ
नरुका वरुमान श्री श्री पाइकां ॥ **श्रुति तार्चक दन सन ॥** ॥ **आठ न नय**

आपति दनमर्न ॥ ॐ मायग्री श्रीयादकां ॥ ॐ ति ॥ ॥ मूखदलं गलयति
 दसर्न ॥ ॐ श्रीं कीं कीं ॥ ॐ गं म हा ग व य न व न व द सर्वजने भवममानयसा
 हा श्री ग व य न द म न श्रीयादकां ॥ ॐ ति सृष्टि कु म न य ॥ ॥ वरु द म न शो
 न द न स न य ॥ ॐ श्रीं श्रीं ॐ मारु तु रे न वा य श्रीं कीं कीं द सः मात तु रे न व श्री
 यादकां ॥ ॐ ति सृष्टि द न स न ॥ ॥ द म न व य कि तु वि कु न नि तु वि स
 र्वेषु व द न म न य ॥ कीं सः ॐ न भा ना ना य नो य श्री म हा वि षु श्री यादकां ॥
 ॐ ति स्ति ति कु म ॥ ॥ मूखान् मूख क न स ॥ म क द न म न य ॥ ॐ वा गी

म्वनी श्री म क द म न श्री यादकां ॥ ॐ ति ॥ ॥ शु स व य सा क न स य ॥
 से व द म न ॥ ॐ ह्रीं कीं ह्रीं नमः मि वा य ॐ ह्रीं कीं ह्रीं नमः य न म मि व श्री या
 दकां ॥ ॐ ति मि व द न स न ॥ ॥ न य च कु व य स क न च क स म र
 वि य ॥ ॐ कीं श्रीं श्री म र वी श्री यादकां ॥ ॐ ति म र वि य कु न ॥ ॥
 धननिर्वानया ॥ मु क च न व ॥ न क च न व ॥ मि थ च न व ॥ नि र्वानः ॥ ॥

धनवलिविय ॥						मा हा
कानेन ॥ ह्रीं मा हा	मा हा क न	क न	वाम धु	यानी	ग व म	का ला
व	व द क	ता ना	उग्र व धु	ल बी	क र	
			म न य	का लि		

य वलिं गृह्ण स्वाहा॥ **वदूकया**॥ वाँ वदूकाय वलिं गृह्ण स्वाहा॥ रुगु रुगु ववा
 दि वलिं गृह्ण स्वाहा॥ **कृपया**॥ क्रीं कृपया लाय वलिं गृह्ण स्वाहा॥ अतिताम्र
 रु नवादि वलिं गृह्ण स्वाहा॥ **वामुधुया**॥ श्रीं वामुधुय वलिं गृह्ण स्वाहा॥
 ययादि मूय आनीनीयो वलिं गृह्ण स्वाहा॥ **आनिया**॥ याँ आनीनीयो व
 लिं गृह्ण स्वाहा॥ श्रीं नूडच धुदि पत्रिवानयो वलिं गृह्ण स्वाहा॥ **गद्यप**
तिया॥ श्रीं गद्यपनय वलिं गृह्ण स्वाहा॥ **धनउग्रचधुया**॥ नैं कीं श्रीं श्रीं श्रीं

५ ३ ययादि मूय आनीनीयो वलिं गृह्ण स्वाहा॥ **३**
 रु नवानन्द श्रीमहाविद्याना अग्रनी श्रीं श्रीं उग्रचधुय वलिं गृह्ण स्वाहा॥
 श्रीं नूडच धुदि नवचतुकां वलिं गृह्ण स्वाहा॥ नैं कीं श्रीं श्रीं चतुकाया
 यनी वलिं गृह्ण स्वाहा॥ नैं कीं श्रीं श्रीं श्रीं रुगवति चतुकाया यनि उव
 न अनीदयो वलिं गृह्ण स्वाहा॥ श्रीं श्रीं श्रीं रुकां नादि मूय माणीकया व
 लिं गृह्ण स्वाहा॥ **॥ यजाम्नाय ॥** नैं कीं श्रीं यजाम्नाय सर्वदवीयो वलिं गृ
 ह्ण स्वाहा॥ **॥ सिद्धिलका ॥** नैं कीं श्रीं उँ २ श्रीसिद्धिलका दवीया वलिं
 गृह्ण स्वाहा॥ **॥ शुशकालि ॥** नैं कीं श्रीं उँ १० श्रीशुशकालि कादर्थ्य व

सिंहद्वारखाहा॥ ॥ **नानाया** ॥ जे जी श्री ॥ **जी** कौं दूँ रुट् श्री उग्रताना
धर्मवल्लिगृहद्वारखाहा॥ ॥ **धनमूनयावल्लि** ॥ जी श्री जे महाविष्णुनसूच
नि, जी महावज्रध्वनी, सौः सर्वविद्यातामय २ सर्वनक्षीकनूरसर्वापवान
सहितं वल्लिगृहद्वारजे जी सौः दूँ रुट् खाहा॥ ॥ **जे धाननूपे** जी महाधान,
सौः मूढुमासिनिमहाहरेन विष्णुमं वल्लिगृहद्वारदूँ रुट् खाहा॥ **धनत्रिवलि**
सु, सुद्विधाकाडा हायकः सकनके ॥ उं सर्वस्यो, रुतस्यो, सर्वस्यो प्रतस्यो,
सर्वस्यो नादस्यो, सर्वस्यो नागस्यो, सर्वस्यो कान्तस्यो, सर्वस्यो गंधर्वस्यो

सर्वस्यो, ॐ सुदवतास्यो, ॐ दं यय धूप, दिय, रुसमूल, ताम्बूनादिर्नवाद्य
ॐ मां वल्लिगृहद्वारखाहा॥ श्री वारुनादि ॥ धन ॥ **नवमूडा** ॥ **दाँ** ॥ **डौँ** ॥ **कौँ** ॥
वूँ ॥ **सः** ॥ **कौँ** ॥ **धूँ** ॥ **धौँ** ॥ **जे** ॥ उं जी सौः आनिमूडा युद्धमय ३ ॥ **धनधूप** ॥
मूर्धयागुयानं ॥ **खनधूपहाय** ॥ **रुट्** ॥ **स्वधनयास** ॥ श्री गऊ धनिमकु
मातः खाहा॥ **घं ० था काडा** ॥ **मयजीमकुनेधूपविस** ॥ उं वनस्यति न सा
त्यना, गं वा शुगन्ध उरुमः ॥ **आधुय ४** ॥ सर्वदवानां धूया संयुतिगृहतां ॥
धनदिय ॥ **सकनसर्कं मतवि य** ॥ **वे जी श्री सुयकासौ** ॥ महादिय ४ सर्व

निमिनापरं ४ सवा स्त्रायननं आति दीयायंयति गृह्यतां ॥ **धनमूनतिक**
न ॥ वे अ न क आ वे अ आ अ की क ल ० ० नित्यु ल वि अ द वो प नि य म क
 ल दी पं नि व द य ७ ॥ स म स व क च क भी य त द वि न वा नि क ॥ आ ना ति
 क मि मे दी पं गृहा व म म सि द्ध य ॥ **ध प द यं सा वा क न ला द व स द्ध डा**
न दाय कं मूनतिक न ॥ ॥ ध न नै य द द्ध डा न त या डा मूर्धा द क
न ला य ॥ सा ध न या य ॥ रु ट मू ल दू कौ य मू दू रं व क मू दा न दू य
नै लै वं ॥ ध न मून न न नं ग डा क ॥ नै य द द्ध य ॥ मून व उ वि धं रं व न

स ४ म ४ ४ स म नि तं म या नि व दि दं रु क्का गृहा व प न म म नी ॥ नै कौ श्री नै य द
गृहा न स्त्रा हा ॥ ३ या ल य स्त्रा हा ॥ ३ मू पा ना य स्त्रा हा ॥ ३ या ना य स्त्रा हा ॥ ३ उ दा ना य
स्त्रा हा ॥ स मा ना य स्त्रा हा ॥ ३ नै य दं स म र्थ या मि ॥ ध न र्थि न ॥ नै क न मू ल त ला धि य
ति श्री सु न्द नी ए य नु ॥ कौ रु ३ वि श्रा त ला धि य ति श्री सु न्द नी ए य नु ॥ सौः स ४ मि
व त ला धि य ति ए य नु ॥ ३ नै कौ सौः कौ सर्व त ला धि य ति ए य नु ॥ ध न ता मून ॥
नै कौ श्री य र्थ मी कि क च र्थी श्री क य नं मू अ व खं दि ने ४ य र्थ ल वं ग ज ला रि कौ
 मू लं य न म म नी ॥ ता व नं नि व द य मि ॥ **ध न म लु न द य का डा न य या य ॥ न**
मा सा य ॥ कुं मा सा य न मः ॥ रु य १० ॥ ता मा स २ मा हा मा स सर्व म कि स्व रू पि ती च उ

वन्ने स्त्रियि न्य फु गस्मा स्ती द्वि दारु व न् ॥ मासाय मा ॥ ॥
य जाय कुम ॥ व दू क ॥ दू ॥ चामु ॥ आ गी नि ॥ ग (दा) स ॥ उ य च तु ॥ ल श्री ॥
का सि ॥ ता ना ॥ म न या मा न का ॥ १०० ॥ ३४ ॥ २१ ॥ १० ॥ ध न स रु
का ॥ मू र्धा स आ द लं ख न उ य द्वा य ॥ जे कौ श्री गु आ ति गु म् (ग) कृ त्वं गृ
ह लक्ष्मी लु गं ज यं सि द्वि र व तु म द वी ल्प स सा दा ल्प न सि ता ॥ ध न त र्प न या
य ॥ यी त य ता स न स्त्र म द मू दि त म हा र्द न वा म नु मूर्ति च वि च द्वा स ना थ ग व
यु न व दू का ला क या ला रु ती द्वा ॥ य द्वा न द्वा पि म चो पि ह ग व स क ला मा न ना
दू र या ला आ गि न्या आ ग यू का ज न च लै सहि ता या न भ त स्त्रि व नु ॥ पि व नु द

वताः सर्व नू डा ल्ये व वि ना श का आ गि नी दू र या ला य म म द रु वा व सि ता ॥ ध
न का रु ॥ धं ० य मा ॥ जे कौ श्री मू ख तु म तु ला का लं वार्क ज न च वा च नं त ल्य दं द
सि तं ज न त म् श्री गु नू व न मः ॥ ॥ जे कौ श्री श्री रू न वो वा च ॥ श्री स म्प र्क म तु ला र्क
कु म य द सहि ता न न्द म कि मु री मा मृ छि न्या य च रु स्त्रं नू क ल कू ल ग तं यं व
कं वा न य दं च ल्या ना यं च का र्ण यून व पि व रु नं सं सृ ष्टं ज न त म् न म थ गु न
व नं रू न वं श्री कू ज म ॥ ॥ जे या सा म कि रु म द्वा ॥ ॥ स न्ना न भ नू मा (म्री) ॥ ॥
न मा मु न मा हा मा य मू द्वा द रु प ना य वी उ क कि नि वि मु द्वा त्मा ना दा क वि न्द

मालिनी ॥ ॥ वन्द्य सदा सुकल कोलिक सा नरुतं ॥ ॥ श्री सासन वटुक
नाथ ॥ ॥ सिन्दूर सादमय मूर्ति न क कंश ॥ ॥ उका नानुष यादा ॥ ॥
वर्द्धनिक मलिन्य सोमवदि ॥ ॥ ॐ ह्यनिकिया सा ॥ ॥ सा मान का ॥ ॥
उत्पला मूक कर्षिका ॥ ॥ मुहुं भाकं ससुतं ॥ ॥ नमस्तु वद वासि ॥ ॥
माया क धुलनी ॥ ॥ नमः ॥ अग्नि नो दी च युक्त घन इति नरुतार्थ सुवी का
लवका मा रुद्यो चर्चिका सा विविध गद्य युता च कुना (थ च सङ्गी रत भा वि
घ्न नाथ चिति पति पट्ट का आगिनी कृत पा सा य का साने क नू या विविध मुष्ट

युता या रुमा वृन्द वक्तु ॥ श्री मात ४ पाठ भा ६ ॥ उपति गुन मूखा सुव्र युता नरु
सां रुत्यां व संयुदा या इदि मृद कवि ता तर्क वदा नत त्वं नाना भा मुनि गंम
सन मिमिवरु ॥ अदकि वा दी यु वी न ४ कू ल कर्त वि सा य युति गलित मदा ४
साध क ४ ह्य ल्य सा दा ७ ॥ त्वं रा सा त्वं य ना म्ना त्वम मृत निन य त्वं म हा सुन्द
नी त्वं का सी त्वं रु न वी त्वं त्वम सि प न क ला त्वं गु षा त्वं स नू या त्वं वि द्या न
न्द नू या त्वं ड स कृत वरु आ म नू ल त्व नू या त्वं (गे नी त्वं मि वा त्वं न ट ०
व वि वि धा का न सा ल त्वं म का ॥ म द व द म य स च्छं द वि वि य न स न्द नि

मनियनकं स्वाधिस्यानमनादृतं। विष्णुद्विमासुसहितं सहस्रार्चनं यनं रुच
त। चक्राक्षनागिसंस्तुत्य नमानं। नमो यनं रुचं संध्या कूकटद्वी चक्रि
कामलिन्युत्त॥ दूर्गया त्वं धृताय वि सर्वदयां तका नक। नूतस्त्रायुगं जि
षामि कूकटस्य वलिनं रुच॥ कानरुनाय विद्महे कूकटस्य धीमहि
तन्ना वलिन्युत्तया दयात्॥ कर्तुं नमो यतीं यनया वलिनं रुच॥ इति कूकटवलिन
विधिः॥ ॥ कूकटववि ॥ ननवनिडा ॥ रुचरुन ॥ लाकृ (नमन रुयाडा) रुति
त्वाथ सिगक निमरुन याय ॥ कूकटया अधियाडा साधनयाय ॥ मूनाका

आन रुद्रसुखय ॥ वं नमः ॥ नै नमः ॥ वं नमः ॥ सै नमः ॥ मनियन चययाथ
सुखय ॥ वं नमः ॥ रुं नमः ॥ मै नमः ॥ ये नमः ॥ नै नमः ॥ सै नमः ॥ स्वाधिस्यान
नरुत्त ॥ उं नमः ॥ रुं नमः ॥ लै नमः ॥ तै नमः ॥ थै नमः ॥ दै नमः ॥ धै नमः ॥ नै
नमः ॥ पं नमः ॥ रुं नमः ॥ मूनादृत नमनस ॥ के नमः ॥ खं नमः ॥ गं नमः
॥ घं नमः ॥ ङं नमः ॥ चं नमः ॥ छं नमः ॥ जं नमः ॥ ञं नमः ॥ तं नमः ॥ ठं नमः
॥ ढं नमः ॥ विष्णुविचक्रस कथय ॥ नै नमः ॥ नै नमः ॥ नै नमः ॥ नै नमः
॥ उं नमः ॥ उं नमः ॥ नै नमः ॥ नै नमः ॥ ठं नमः ॥ ठं नमः ॥ उं नमः ॥ उं नमः

॥ इर्गयात्वं धृताद वि. सर्वर्षेण तत्कानक. भूतस्त्रो यू जगिष्ठा मि. कूकू
ठ स्य वलिं रुद्रत् ॥ धन. मूकमकुन स्याय ॥ रुद्र मूकमकुन रुद्र ॥ सिन द
वस्त्र मूकमकुन ॥ सिन संद वस्त्र. मतविद्य. मत वस्त्र ॥ मूक कूकूठ वलिवि
यविधि ॥ रुद्र ॥ धन वृकन मूकमकुन ॥ द वस्त्र वत. सिंधु. माहनि. स. मान
स्वान. मूकमकुन ॥ द वस्त्र स्वान काकाय ॥ धं धमनं चित्त सिंधु. स्वान काकाय ॥
साक्षि धमन ॥ म. कियान्. काय मानका. कूकू मूकमकुन ॥ धन. म. कियान्
यू काय ॥ धन तर्पन ॥ ख. रुद्र ॥ यीतं युता सन मूक. मद मूकमकुन म. रुद्र वत
न. रुद्र ॥ रुद्र मूकमकुन वि. रुद्र. सर्वतत्याय श्री म. रुद्र. तन्ना र्जिव युवा दयात् ॥

25

मूर्ति वलिवलु सनाथा गतगुनवदका साकया सादहीत्या ॥ यद्वा न
कायि मया पिरु गग सकला मातनाक्षपा ला यागिना या गयु का ३
नयन सहिता यानम तत्यि वलु ॥ पिवनु दव ताः सर्व नडा ॥ ये ववि नायक
आगिनी कउ या ला य मम द रु व वल्लिता ॥ **यथ म ॥** ॥ **छायना ॥** जे न नू के
विम लु मा धान म छा वि म ति म लु सं वी न य कु क मा धान म छा वि म ति म
लु सं वी न य कु ल्लिता वंद नू छा रु क स व चि र न म रु न कु व लि च न म
रु छान ना यी के न म रु रु न व नू पा य न म रु रु व ता न के नू छा रु क या

गी न्या वदका नांत ॥ ये व च रु न वं च ॥ दं च कुं ॥ का का नं न मा म्य रुं ॥ **३०**
ति ॥ ॥ **यं ना ॥** अ वि न्या सा रु वं द रु नू न ना व न म व च म हा व नं व कु द रु
ना रु श्री म क च्छ रु कं म रु ना ॥ रु व य वृ द्वि ४ ल क्षी स न ति व द्धु नं न सा य
ना य सर्व स्य द व द व न मा मि तं य ना मृ त न सा द वा यी य ता रु व रुं व व न
न्य तु क न या गी न्या न य तु क ल य रु का न न्य तु श्री कू ला चार्थ १ य वा ना च
न मा न मः ॥ **३१ ति ॥** ॥ **स म च ॥** ऊ य नि द वा रु न पा द पं क रं य स न वा
मा मृ त मा क दा य कं नू न रु सि द्धा न ग म ति प वा व कं न मा मि या शा रु क

विष्णुसहस्रनाम

... सायानि नीचकुमक्षक मारुत सुवेदिन नमामि सिनसानार्थ
 हनवर्ह नविपियं आयदा दूनिता न्धा नान् समया वाज पातु कान् सर्वः
 मरु विपा हंतु दिव्यचक्र सभलं संयुक्तानां यति पानितानां दशधना
 सुशयू न शनास्त्रा कनाउ सानि रुगवान् कऊसं नन्दन साधका कला
 नान् पास सिद्ध सा पा पयतु समर्थ रुष्टा गिती नौ सा सां रुवीरु नरु काम
 ममा पावस्त्रा ज्ञा युवा च प्रत्येक रुभ वद व नन्दन साधका सिद्धि नन्द
 नु कल आगि ती नन्दन कु कला अर्थ यवान कल दीर्घता ॥ ४० ॥ ति चक्रः ॥

हरिः सुखिनः सन् सुखी नीनद हरिः प्रसादं मदा अर्चयन् जीवमान

धनमनि नलिवि सङ्ग नयाय ॥ संस्तवमर्पय ॥ नन्दन यन स्नानं स्वस्नानं
 पनम श्वनि अणुवक्त्रा दयादवान विंदः यनमं च दं तिष्ठद विपन स्नानं स्वस्नानं
 नयनम श्वनि यणुवक्त्रा दयः सर्व सुनासि सुनिभ ददि ॥ दवया स्नान का सा
 डा क्रासगा स्वा सा नदू का या डा यनम श्वनि यडा ददयक मनसं विद्या करण
 वद ॥ ॥ धनसुख सादि ॥ ॥ निम्मा स्य पूजा याय ॥ ॥ ४० ॥ ति म
 निकर्मया संक्षेप पट्टति समाक ॥ संवत् ८४८ ला डव रुषु श्रमा वा
 सा रुक्मन करु जेन्दु या न आदि सावन हवन श्वन नय धून का ॥ ३५ ॥

कोपमदि २